

ॐ जय शिव आरती



दुर्गाबाड़ी
Durgabari

जय शिव ओमकारा प्रभु हर शिव ओमकारा ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ... ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे ।

हंसासन, गरुडासन, वृषवाहन साजे ॥ ॐ... ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे ।

तीनो रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ... ॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।

त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी ॥ ॐ... ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।

सनकादिक, ब्रम्हादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ... ॥

कर के मध्य कमण्डलु चक्र, त्रिशूलधारी ।

जगहर्ता, जगकर्ता, जगपालन कारी ॥ ॐ... ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।

प्रानवाक्षर के मध्ये ये तीनो के धार ॥ ॐ... ॥

त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोई नर गावे ।

कहत शिवानन्द स्वामी मनवान्छित फल पावे ॥ ॐ... ॥

जय शिव ओमकारा प्रभु हर शिव ओमकारा ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ... ॥

जय शिव ओमकारा प्रभु हर शिव ओमकारा ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ... ॥